

[2023] 4 एस. सी. आर. 568

/

[2023] 4 एस सी आर।

/

सुनीता नेरेडी

बनाम

वाई एस अविनाश रेड्डी और ए. एन. आर.

(2023 की आपराधिक अपील संख्या 1251)

/

अप्रैल 24,2023

[डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़ और पामिदिघंतम श्री नरसिम्हा, जे. जे.]

जाँच-मृतक की हत्या पाई गई-सी. बी. आई. ने पाँच व्यक्तियों के नाम का आरोप पत्र और पूरक आरोप पत्र प्रस्तुत किया-सी. बी. आई. ने प्रथम प्रतिवादी को समन जारी किया-प्रथम प्रतिवादी कई मौकों पर सी. बी. आई. के समक्ष पेश हुआ-प्रथम प्रतिवादी ने रिट याचिका दायर की-आई. डी. 1 पर, उच्च न्यायालय (आई) ने गिरफ्तारी पर अंतरिम रोक लगा दी; और (आई) निर्देश दिया कि सी. बी. आई. के समक्ष जाँच "मुद्रित/लिखित रूप में" होगी, जिसके दौरान एक प्रश्नावली भी प्रथम प्रतिवादी को सौंपी जा सकती है-अपील पर कहा गया:उपर्युक्त आदेश जांच को बाधित करेगा-उच्च न्यायालय के लिए यह निर्देश देने के लिए कोई वारंट नहीं है कि साजिश में संदिग्ध के रूप में पूछताछ किए गए व्यक्ति की जांच मुद्रित या लिखित रूप में होनी चाहिए-इसी तरह, उच्च न्यायालय के लिए यह कहना पूरी तरह से अनुचित है कि प्रश्नावली भी प्रतिवादी को सौंपी जा सकती है-उच्च न्यायालय के ऐसे आदेश जांच के पाठ्यक्रम को गंभीर रूप से पूर्वाग्रहित करने के लिए उत्तरदायी हैं-उच्च न्यायालय के आक्षेपित आदेश को दरकिनार कर दिया गया।

/

/

/

/

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2023 की आपराधिक अपील संख्या 1251।

2023 के सी. आर. एल. पी. संख्या 3798 में हैदराबाद में तेलंगाना राज्य के लिए उच्च न्यायालय के दिनांक 18.04.2023 के निर्णय और आदेश से। सिद्धार्थ लूथरा, सीनियर एड., सुश्री जेसल वाही, अनमोल खेटा, कुमार कश्यप, एड. अपीलार्थी के लिए।

/

तुषार मेहता, एस. जी., मुकुल रोहतगी, रंजीत कुमार, वरिष्ठ अधिवक्ता।, मुकुंद पी. उन्नी, सिद्धार्थ सरमा, अधिवक्ता। उत्तरदाताओं के लिए।

/

568 ए.

569

सुनीता नैरेडी बनाम वाई. एस. अविनाश रेड्डी और ए. एन. आर.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई

1. अनुमति दी गई।

2. अपील 2023 की आपराधिक याचिका संख्या 3798 में तेलंगाना राज्य के लिए उच्च न्यायालय के एकल न्यायाधीश के 18 अप्रैल 2023 के एक आदेश से उत्पन्न होती है। आर. सी.-04 (एस)/2020/एस. सी.-III/एन. डी. के संबंध में दंड प्रक्रिया संहिता 1973 1 की धारा 438 के अंतर्गत पहले प्रतिवादी को अग्रिम जमानत देने के लिए एक आवेदन के साथ उच्च न्यायालय में याचिका दायर की गई थी।

/

3. मृतक वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी की हत्या आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले के पुलिवेंदुला में उनके घर पर मार्च 2019 की दरम्यानी रात को की गई थी। मृतक अविभाजित आंध्र प्रदेश राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री वाई. एस. राजशेखर रेड्डी के भाई थे।

/

4. एम. वी. कृष्णा रेड्डी द्वारा 15 मार्च 2019 को सुबह 8 बजे पुलिवेंदुला शहरी पुलिस स्टेशन में एक शिकायत दर्ज की गई थी जिसके परिणामस्वरूप अपराध संख्या 84/2019 का पंजीकरण हुआ।

/

5. अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (सी. आई. डी.) के नेतृत्व में पुलिस महानिदेशक द्वारा एक विशेष जांच दल का गठन किया गया था। विशेष जांच दल का पुनर्गठन 13 जून 2019 और 10 अक्टूबर 2019 को किया गया था।

/

6. अपीलार्थी मृतक की बेटी है। अपीलार्थी ने उच्च न्यायालय के समक्ष एक याचिका दायर की जिसमें जांच को केंद्रीय जांच ब्यूरो 2 को स्थानांतरित करने की मांग की गई।

7. 11 मार्च 2020 को, उच्च न्यायालय ने निर्देश दिया कि सी. बी. आई. पुलिवेंदुला शहरी पुलिस स्टेशन के सी. आर. नंबर 84/2019 में आगे की जांच करेगी।

/

8. सी. बी. आई. ने 9 जुलाई 2020 को आर. सी.-04 (एस)/2020/एस. सी.-III/एन. डी. के रूप में अपराध दर्ज किया।

/

9. 21 अक्टूबर 2021 को, सी. बी. आई. ने न्यायिक मजिस्ट्रेट, प्रथम श्रेणी, पुलिवेंदुला की न्यायालय के समक्ष एक आरोप पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें चार व्यक्तियों, येरा गंगी रेड्डी (अल), यादती सुनील यादव (ए 2), गजजाला उमा शंकर रेड्डी (ए 3) और शेख दस्तगिरी (ए 4) का नाम शामिल किया गया।

1 "सी. आर. पी. सी. "2" सी. बी. आई. "

/

570

/

[2023] 4 एस सी आर।

/

भारतीय दंड संहिता, 1860 की धाराओं 307 और 120-बी के अंतर्गत दंडनीय अपराध। सी. बी. आई. द्वारा प्रस्तुत आरोप पत्र में अन्य लोगों के अलावा, प्रथम प्रतिवादी, उसके पिता और दो अन्य व्यक्तियों को मृतक की हत्या की साजिश में संदिग्ध के रूप में नामित किया गया है।

10. 17 नवंबर 2021 को सी. बी. आई. ने डी. शिवशंकर रेड्डी को गिरफ्तार किया।

/

12. 31 जनवरी 2022 को, सी. बी. आई. ने डी. शिवशंकर रेड्डी को ए 5 के रूप में नामित करते हुए एक पूरक आरोप पत्र दायर किया।

13. यह देखते हुए कि गवाहों के जीवन को गंभीर खतरा है और सी. बी. आई. के अधिकारियों के खिलाफ झूठी शिकायतें दर्ज की जा रही हैं, अपीलार्थी और उसकी मां ने इस न्यायालय का रुख किया और सी. बी. आई. विशेष न्यायालय कडप्पा, आंध्र प्रदेश से मुकदमे को हैदराबाद या दिल्ली में सी. बी. आई. विशेष न्यायालय में स्थानांतरित करने और सी. बी. आई. को समयबद्ध तरीके से जांच समाप्त करने का निर्देश देने की मांग की।

/

/

14. 29 नवंबर 2022 के एक आदेश द्वारा, इस न्यायालय ने मुकदमे को आंध्र प्रदेश के कडप्पा से हैदराबाद स्थानांतरित कर दिया है। 15. इस बीच, सी. बी. आई. ने पहले प्रतिवादी को 23 जनवरी 2023 को उसके सामने पेश होने के लिए समन जारी किया। 16 फरवरी 2023 को और फिर 6 मार्च 2023 को पेश होने के लिए पहले प्रतिवादी को एक नया नोटिस जारी किया गया था। पहला प्रतिवादी कई मौकों पर सी. बी. आई. के सामने पेश हुआ है।

/

16. प्रथम प्रत्यर्थी ने उच्च न्यायालय के समक्ष एक रिट याचिका दायर की। 10 मार्च 2023 को, उच्च न्यायालय ने सी. बी. आई. को अपने समक्ष पूरा रिकॉर्ड पेश करने का निर्देश दिया और उसे 14 मार्च 2023 को जांच अधिकारी के सामने पेश होने का आदेश देते हुए पहले प्रतिवादी के खिलाफ कोई दंडात्मक कदम नहीं उठाने का निर्देश दिया।

/

17. 13 मार्च 2023 को उच्च न्यायालय ने आदेश सुरक्षित रख लिए। 17 मार्च 2023 को, उच्च न्यायालय ने रिट याचिका में आई. ए. संख्या 1 और 2 का निपटारा करते हुए कहा कि वह सी. आर. पी. सी. की धारा 161 के अंतर्गत पहले प्रतिवादी की परीक्षा पर रोक लगाने के लिए इच्छुक नहीं था। हालाँकि, अंतरिम आदेश को खाली करते हुए, उच्च न्यायालय ने निर्देश दिया कि पहले प्रतिवादी से उसके वकील की दृष्टि में पूछताछ की जाएगी।

/

18. 14 अप्रैल 2023 को सी. बी. आई. ने गजला उदय कुमार रेड्डी को गिरफ्तार किया। 19. 15 अप्रैल 2023 को पहले प्रतिवादी के पिता को सी. बी. आई. द्वारा गिरफ्तार किया गया था।

/

/

सुनीता नैरेडी बनाम वाई. एस. अविनाश रेड्डी और ए. एन. आर. [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

/

20. 16 अप्रैल 2023 को, सी. बी. आई. ने 17 अप्रैल 2023 को अपने कार्यालय में पेश होने वाले पहले प्रतिवादी को सी. आर. पी. सी. की धारा 160 के अंतर्गत एक नोटिस दिया।

21. पहले उत्तरदाता ने अग्रिम के लिए एक आवेदन दायर किया

जमानत।

/

22. उच्च न्यायालय ने 18 अप्रैल, 2023 के अपने आदेश में निर्देश दिया कि पहला प्रतिवादी 19 और 25 अप्रैल 2023 के बीच सी. बी. आई. के कार्यालय में उपस्थित होगा; प्रश्न और उत्तर मुद्रित/लिखित रूप में होंगे और एक प्रश्नावली भी पहले प्रतिवादी को सौंपी जा सकती है। इस बीच, उच्च न्यायालय ने निर्देश दिया है कि पहले प्रतिवादी को गिरफ्तार नहीं किया जाएगा और कार्यवाही 25 अप्रैल, 2023 तक चलने का निर्देश दिया है।

/

23. इन कार्यवाही में 21 अप्रैल 2023 को नोटिस जारी किया गया था। प्रथम प्रतिवादी ने विद्वान वकील के माध्यम से नोटिस स्वीकार किया और इन कार्यवाहियों में एक जवाबी शपथपत्र दायर किया है।

/

24. हमने अपीलार्थी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील श्री सिद्धार्थ लूथरा, प्रथम प्रतिवादी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील श्री मुकुल रोहतगी और श्री रंजीत कुमार और दूसरे प्रतिवादी की ओर से पेश भारत के सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता को सुना है।

/

25. कार्यवाही के दौरान, न्यायालय का ध्यान उस शपथपत्र की ओर आकर्षित किया गया है जो सी. बी. आई. द्वारा रिट कार्यवाही में दायर किया गया था। सी. बी. आई. द्वारा दायर शपथपत्र के पैराग्राफ 9, 16 और 45 नीचे दिए गए हैं:-

“9 कि आगे की जाँच के दौरान याचिकाकर्ता/वाई. एस. अविनाश रेड्डी के एक करीबी सहयोगी, डी. शिवशंकर रेड्डी (ए-5 और तत्कालीन महासचिव वाई. एस. आर. सी. पी., आंध्र प्रदेश) की भूमिका वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी की हत्या की साजिश और अपराध स्थल पर सबूतों को नष्ट करने में भी पाई गई। इसके अलावा, यह भी पाया गया कि आरोपी टी. गंगी रेड्डी उर्फ येरा गंगी रेड्डी (ए-1) ने भी अपराध स्थल पर साक्ष्यों को नष्ट करने में सक्रिय रूप से भाग लिया था, इसके अलावा एक चश्मदीद गवाह बी. रंगन्ना (मृतक के घर का चौकीदार) को आपराधिक धमकी देने के कार्य में भी भाग लिया था। इसलिए, एक पूरक आरोप पत्र दिनांकित

31.01.2022 यू/एस 173 (8) करोड़। एल. डी. के समक्ष पी. सी. दाखिल किया गया था।
न्यायिक न्यायालय

/

/

/

/

/

[2023] 4 एस सी आर।

मजिस्ट्रेट-प्रथम श्रेणी, पुलिवेंदुला अभियुक्त डी. शिवशंकर रेड्डी (ए-5) के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 201 और 120-बी आर/डब्ल्यू. इसके अलावा, आरोपी टी. गंगी रेड्डी उर्फ येरा गंगी रेड्डी (ए-1) पर भी भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 201, 506 और 120-बी आर/डब्ल्यू 201 के तहत अपराधों के लिए आरोप पत्र दायर किया गया था।

/

XXX

XXX

XXX

16. कि आगे की जाँच के दौरान याचिकाकर्ता/वाई. एस. अविनाश रेड्डी और अन्य की भूमिका सामने आई है। याचिकाकर्ता/वाई. एस. अविनाश रेड्डी द्वारा दायर लिखित याचिका के परिणामस्वरूप, इस माननीय न्यायालय के दिनांक 1 के आदेश के अनुपालन में, मृतक श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी की हत्या में याचिकाकर्ता की भूमिका के संबंध में सबूत इस माननीय न्यायालय के समक्ष सीलबंद लिफाफे में प्रस्तुत किए गए हैं क्योंकि मामले में आगे की जांच अभी भी चल रही है। XXX

/

XXX

XXX

/

45. पैरा 14 के जवाब में, यह प्रस्तुत किया जाता है कि साजिश में शामिल दोनों कार्य यानी हत्या के निष्पादन का कार्य और एस. ओ. सी. में सबूतों को नष्ट करने के कार्य बड़ी साजिश का अभिन्न अंग थे, जिसमें याचिकाकर्ता वाई. एस. अविनाश रेड्डी के अलावा कोई और लाभार्थी नहीं था, जिसमें हत्या का निष्पादन येरा गंगी रेड्डी (ए-1), यादती सुनील यादव (ए-2),

गजजाला उमा शंकर रेड्डी (ए-3) और शेख दशथागिरी (ए-4) नाम के अभियुक्तों द्वारा किया गया था, जबकि अधिनियम का दूसरा भाग यानी अपराध स्थल पर सबूतों को नष्ट करना याचिकाकर्ता वाई. एस. अविनाश रेड्डी, वाई. एस. भास्कर रेड्डी, डी. शिवा के कहने पर किया गया था। इसलिए, इस पैरा में वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी की हत्या के पीछे श्रीमती सुनीता रेड्डी और उनके पति श्री शेखर रेड्डी के उद्देश्य को जिम्मेदार ठहराते हुए किए गए दावे निराधार हैं। हालांकि जाँच के दौरान, यह पता चला है कि श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी ने श्रीमती से शादी की थी। वर्ष 2010 के दौरान शेख शमीम और उनके साथ संबंध बनाए रखना, कि इस शादी के बारे में वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के परिवार के सदस्य, विशेष रूप से श्री एन. शिव प्रकाश रेड्डी, ए

/

/

/

/

/

सुनीता नैरेडी बनाम वाई. एस. अविनाश रेड्डी और ए. एन. आर. [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

हालांकि, वे खुश नहीं थे, जांच के दौरान, उनमें से किसी के लिए भी कोई सबूत सामने नहीं आया है (यानी श्रीमती। सुनीता रेड्डी, श्री एन. राजा शेखर रेड्डी या श्री एन. शिव प्रकाश रेड्डी) श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी की हत्या के पीछे की साजिश में शामिल हैं। "

26. इस स्तर पर, सह-अभियुक्त से संबंधित सी. बी. आई. मामलों के प्रधान विशेष न्यायाधीश, हैदराबाद के समक्ष रिमांड कार्यवाही में 18 अप्रैल 2023 के आदेश से निष्कर्ष निकालना भी महत्वपूर्ण है:

/

“(v) याचिकाकर्ता/शिकायतकर्ता ने आगे कहा कि जांच के दौरान शेख दासथागिरी (ए-4, सरकारी गवाह बने) ने खुलासा किया कि 14 की दरम्यानी रात हत्या के बाद, येरा गंगी रेड्डी ने शेख दासथागिरी और अन्य दो सह-अभियुक्तों को लगभग 5.20 बजे आई. डी. 1 पर फोन किया और उन्हें चिंता न करने के लिए कहा। उन्होंने उनसे यह भी कहा कि उन्होंने वाई. एस. भास्कर रेड्डी और अन्य लोगों से बात की है, वे सब कुछ संभाल लेंगे और उन्हें बाद में पैसे मिलेंगे। वाई. एस. अविनाश रेड्डी, वाई. एस. भास्कर रेड्डी, डी. शिव शंकर रेड्डी, गजजाला उदय कुमार रेड्डी और वाई. गंगी रेड्डी की उपस्थिति में दिल का दौरा पड़ने और अपराध स्थल को नष्ट

करने के कारण मृतक की मौत की कहानी फैलाने का बाद का कार्य शेख दशथागिरी के बयान के खुलासे की पुष्टि करता है।

/

/

/

XXX

XXX

XXX

(vii) याचिकाकर्ता/शिकायतकर्ता ने आगे कहा कि शेख दशथागिरी (ए-4, सरकारी गवाह बने) ने आगे खुलासा किया कि येरा गंगी रेड्डी/ए-1 द्वारा हमलावरों को दिए गए आश्वासन के आधार पर कि उन्हें पुलिस के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हत्या के सभी सबूत नष्ट कर दिए गए हैं और सब कुछ साफ कर दिया गया है, हमलावरों ने सच्चाई का खुलासा नहीं किया जब स्थानीय पुलिस ने उन्हें पूछताछ के लिए बुलाया। इसके अलावा, आई. डी. 1 की सुबह आरोपी गजला उदय कुमार रेड्डी, डी. शिवशंकर रेड्डी/ए-5 और अन्य पहले से ही श्री वाई. एस. भास्कर रेड्डी/वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के घर पर मौजूद थे और टी. गंगी रेड्डी @वाई. गंगी रेड्डी/ए-1 द्वारा तीन अन्य सह-सहायकों को बताए गए अपराध के दृश्य का प्रबंधन करने के लिए तुरंत वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के घर जाने की तैयारी कर रहे थे।

/

/

/

/

/

[2023] 4 एस सी आर।

शेख दशथागिरी (ए-4 सरकारी गवाह बने) सुबह 5.20 बजे अपने आवास पर।

(viii) याचिकाकर्ता/शिकायतकर्ता ने आगे कहा कि श्री एन. शिव प्रकाश रेड्डी ने अपने मोबाइल फोन से श्री वाई. एस. अविनाश रेड्डी को उनके मोबाइल फोन पर 06 बजे कॉल किया: 26:15 सुबह उन्हें श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के निधन के बारे में सूचित किया। इसके बाद, श्री वाई. एस. अविनाश रेड्डी, डी. शिवशंकर रेड्डी/ए-5, गजजाला उदय कुमार रेड्डी, ई. सी. सुरेंद्र रेड्डी,

प्रशांत रेड्डी, राघव रेड्डी और रमण रेड्डी (दोनों वाई. एस. अविनाश रेड्डी के पास) के साथ तुरंत तीन से चार वाहनों में श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के घर पहुंचे। सी. एफ. एस. एल., नई दिल्ली द्वारा अभियुक्त गजजाला उदय कुमार रेड्डी के गूगल टेकआउट के फोरेंसिक विश्लेषण से पता चलता है कि गजजाला उदय कुमार रेड्डी के मोबाइल फोन का स्थान 06 बजे श्री वाई. एस. भास्कर रेड्डी के घर के अंदर था: 25:25 सुबह और बस दो मिनट बाद 06 बजे: 27:28 सुबह, उनके मोबाइल फोन की लोकेशन श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के घर के बाहर पाई गई और उसके बाद, वे 6 बजे श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के घर के अंदर मौजूद पाए गए: 29 6 तक: 31 एएम।

/

/

/

(ix) याचिकाकर्ता/शिकायतकर्ता ने आगे कहा कि श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के घर में प्रवेश करने के बाद वाई. एस. अविनाश रेड्डी और उनके साथ आए अन्य लोगों ने बेडरूम में खून और बाथरूम में खून से लथपथ शव को देखा था और सिर पर भीषण चोटें दिखाई दे रही थीं। इसके बाद, श्री वाई. एस. अविनाश रेड्डी ने अपने पीए, राघव रेड्डी के एक नंबर (9000006243) पर मोबाइल का उपयोग करते हुए श्री जे. शंकरैया, (92121100544), तत्कालीन सर्कल इंस्पेक्टर, पुलिवेंदुला को फोन किया और उन्हें सूचित किया कि श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने और भारी खून की उल्टी के कारण हुई थी, जो बेडरूम और बाथरूम में मौजूद है। उन्होंने आगे श्री जे. शंकरनकरा को बंदोबस्त के लिए तीन से चार सिपाहियों को भेजने के लिए कहा। यह स्पष्ट है कि श्री वाई. एस. अविनाश रेड्डी ने श्री वाई. एस. विवेकानंद रेड्डी के शव को देखने और डी. शिवशंकर रेड्डी के साथ इस मामले पर चर्चा करने के बाद ही पुलिस को बुलाया था। यह इंगित करता है कि दिल के दौरे और खून की उल्टी की झूठी कहानी को साजिश के एक हिस्से के रूप में प्राकृतिक मृत्यु का रंग देने के लिए पूर्व-नियोजित तरीके से प्रसारित किया गया था। "

/

/

/

/

/

27. इस पृष्ठभूमि में, विचार के लिए जो मुद्दा उठता है, वह यह है कि क्या उच्च न्यायालय (i) गिरफ्तारी पर अंतरिम रोक लगाने और (ii) यह निर्देश देने में उचित था कि जांच के दौरान सी. बी. आई. के समक्ष परीक्षा "मुद्रित/लिखित रूप में" होगी, जिसके दौरान एक प्रश्नावली भी पहले प्रतिवादी को सौंपी जा सकती है।

/

28. इस स्तर पर यह ध्यान दिया जा सकता है कि उच्च न्यायालय को अभी भी अग्रिम जमानत देने के आवेदन पर सुनवाई करनी थी। जब 18 अप्रैल 2023 को आक्षेपित आदेश पारित किया गया था, तो उच्च न्यायालय को अग्रिम जमानत के आवेदन के निपटारे तक गिरफ्तारी पर अंतरिम रोक लगाने के लिए एक आवेदन के साथ स्थानांतरित किया गया था। उस स्तर पर भी, उच्च न्यायालय ने यह मत व्यक्त किया है कि:

/

"15. सी. बी. आई. ने जाँच के दौरान पाया है कि मृतक की हत्या के लिए कई उद्देश्य हैं। इस याचिकाकर्ता के उद्देश्यों में से एक राजनीतिक आकांक्षाओं के बारे में है और यह कि मृतक उसके रास्ते में आ सकता है। याचिकाकर्ता के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि यह विवाद में नहीं है कि मृतक ने याचिकाकर्ता के लिए प्रचार किया और यह दूसरी बार है जब याचिकाकर्ता चुना गया था। हालाँकि, आरोप पत्र के अनुसार, हालाँकि अलग-अलग इरादे और दुर्भावनाएँ थीं, लेकिन आरोपी मृतक को खत्म करने के लिए एक साथ आए थे।

/

/

16. मामला अभी भी जांच के दायरे अंतर्गत है और कई उद्देश्य सुझाए गए हैं। इस याचिकाकर्ता का उद्देश्य ए 4 के कबूलनामे के आधार पर है, जिसे उसके अनुसार अल द्वारा सूचित किया गया था कि बड़े व्यक्ति शामिल हैं और उसने ए 7 और दो अन्य लोगों के साथ इस याचिकाकर्ता का नाम लिया। वर्ष 2021 में जो उपलब्ध था, उसके अलावा कोई अन्य सबूत नहीं है, हालाँकि इस याचिकाकर्ता को इस वर्ष जनवरी तक गिरफ्तार या पूछताछ नहीं की गई थी। ऐसा मामला नहीं है कि यह याचिकाकर्ता फरार था। सी. बी. आई. ने इस याचिकाकर्ता को ए 7 के साथ गिरफ्तार नहीं करने का फैसला किया है, लेकिन 160 सी. आर. पी. सी. नोटिस जारी किया है। चूंकि पक्षपात, साक्ष्य के निर्माण और गलत निहितार्थ के आरोप थे, इसलिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ता के वकील के अनुसार जांच अधिकारी को बदलने का निर्देश दिया। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा जांच पूरी करने के लिए निर्धारित समय सीमा 30 अप्रैल, 2023 है। "

/

29. इस स्तर पर उच्च न्यायालय का उपरोक्त निष्कर्ष अपरिपक्व है, विशेष रूप से सीबीआई द्वारा शपथपत्र पर जो कहा गया है, उसके संदर्भ में। सी. बी. आई. द्वारा अपने शपथपत्र में जो कहा गया है, उसे ध्यान में रखते हुए, हमारा स्पष्ट रूप से यह विचार है कि उच्च न्यायालय ने खुद को गलत तरीके से लागू किया है और जारी किए गए निर्देशों के संदर्भ में एक असाधारण आदेश पारित किया है। उच्च न्यायालय ने कहा है कि पहला प्रतिवादी गिरफ्तारी की आशंका में जांच के लिए उपस्थित नहीं हो सकता है और वैकल्पिक उपचार की मांग कर सकता है। यह निर्देश देते हुए कि ए 6 और ए 7 के साथ पहला प्रतिवादी पूछताछ के लिए उपलब्ध होना चाहिए, जिन्हें पुलिस हिरासत दी गई है, और उच्च न्यायालय ने निर्देश दिया है कि पहला प्रतिवादी 19 और 25 अप्रैल 2023 के बीच सी. बी. आई. के कार्यालय में उपस्थित होगा और (i) प्रश्न और उत्तर मुद्रित/लिखित रूप में होगा; और (ii) प्रश्नावली भी प्रतिवादी को सौंपी जा सकती है।

/

/

30. इस तरह का आदेश जांच को बाधित कर देगा। उच्च न्यायालय के लिए यह निर्देश देने के लिए कोई वारंट नहीं है कि साजिश में संदिग्ध के रूप में पूछताछ किए गए व्यक्ति की जांच मुद्रित या लिखित रूप में होनी चाहिए। इसी तरह, उच्च न्यायालय के लिए यह कहना पूरी तरह से अनुचित है कि प्रश्नावली भी प्रतिवादी को सौंपी जा सकती है। उच्च न्यायालय के ऐसे आदेश जांच के पाठ्यक्रम पर गंभीर रूप से प्रतिकूल प्रभाव डालने के लिए उत्तरदायी हैं। विशेष रूप से इस स्तर पर जब सी. बी. आई. को अपराध की पूरी तरह से जांच करनी है और कई अभियुक्तों की भूमिका जो प्रस्तुत किए गए आरोप पत्र का हिस्सा नहीं हैं, हमारा विचार है कि उच्च न्यायालय द्वारा जारी किए गए निर्देश अनुचित थे।

/

/

31. हम तदनुसार अपील की अनुमति देते हैं और 18 अप्रैल 2023 के उच्च न्यायालय के आक्षेपित आदेश को खारिज कर देते हैं।

32. चूँकि उच्च न्यायालय के समक्ष अग्रिम जमानत के लिए आवेदन विचाराधीन है, हम स्पष्ट करते हैं कि इस आदेश में टिप्पणियां आवेदन का मूल्यांकन करने वाले उच्च न्यायालय के रास्ते में नहीं आएंगी। 33. हस्तक्षेप करने वाले घटनाक्रमों को ध्यान में रखते हुए, हमारा विचार है कि सी. बी. आई. द्वारा जांच पूरी करने का समय बढ़ाया जाना चाहिए और हम तदनुसार इसे 30 जून 2023 तक बढ़ाते हैं।

/

/

अंकित ज्ञान

अपील अनुज्ञात ।

/